ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/245

स्वरोजगार और स्वावलंबन: नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास मॉडल का एक विश्लेषण

सिद्धार्थ मिश्र

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.299

सारांश – प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतरत्न नानाजी देशमुख द्वारा प्रतिपादित एवं दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा क्रियान्वित ग्रामीण विकास के चित्रकूट मॉडल का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण और अनियंत्रित शहरीकरण के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था गहरे संकट में है, जिसके परिणामस्वरूप बडे पैमाने पर युवाओं का पलायन हो रहा है। इस गंभीर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में नानाजी देशमुख का स्वरोजगार और स्वावलंबन का दर्शन एक व्यावहारिक एवं आत्मनिर्भर समाधान प्रस्तुत करता है। इस शोध में यह गहराई से विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार चित्रकूट परियोजना के अंतर्गत सैकडों गाँवों में पानी, कृषि, स्थानीय कुटीर उद्योग तथा स्वास्थ्य एवं शिक्षा के समन्वय से ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाया गया। शोध के मुख्य निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि समाज शिल्पी दंपति तथा उद्यमिता विद्यापीठ जैसी संस्थागत प्रणालियों ने ग्रामीण युवाओं को याचक से उत्पादक में परिवर्तित कर दिया।

मुख्य शब्द – नानाजी देशमुख, स्वावलंबन, स्वरोजगार, चित्रकूट मॉडल, दीनदयाल शोध संस्थान, ग्रामीण उद्यमिता, समाज शिल्पी दंपति

प्रस्तावना –

भारत गाँवों का देश है। महात्मा गांधी कहा करते थे कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है भारत ग्रामवासिनी है। यहाँ की सभ्यता एवं रीति–रिवाज ग्राममय हैं। पूरे राष्ट्र के विकास के लिए गाँवों का विकसित होना अनिवार्य है। वर्षों तक ग्रामीण विकास के लिए संगठित प्रयास करने वाले प्रसिद्ध समाजसेवी नानाजी देशमुख ने ग्रामीण विकास को परिभाषित करते हुए बताया कि हमारे गाँव ऐसे हों जहाँ कोई गरीब न हो, कोई बेरोजगार न हो, कोई बीमार न हो, गाँव में कोई विवाद न हो तथा गाँव का परिवेश स्वच्छ, हराभरा एवं प्रदूषण रहित हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित, सदाचारी, स्वावलंबी एवं स्वस्थ हो ताकि ग्राम एवं राष्ट्र का विकास हो सके। इसी संदर्भ में भारतरत्न नानाजी देशमुख का ग्रामीण विकास मॉडल अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक सिद्ध होता है। नानाजी देशमुख ने ग्रामीण विकास को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसे सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से जोडकर एक समग्र विकास की अवधारणा प्रस्तुत की। उनका विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसके गाँव आत्मनिर्भर, शिक्षित, स्वस्थ, विवाद–मुक्त, स्वच्छ एवं आर्थिक रूप से सशक्त हों। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को ग्रामीण पुनर्निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों के लिए समर्पित किया।

नानाजी देशमुख ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन तथा महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की अवधारणाओं को व्यवहारिक रूप प्रदान करते हुए मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से एक अभिनव ग्रामीण विकास मॉडल विकसित किया। यह मॉडल ग्रामोदय से राष्ट्रोदय की अवधारणा पर आधारित है, जिसका मूल उद्देश्य ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाकर राष्ट्र के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। इस मॉडल में कृषि विकास, जल संरक्षण, उद्यमिता, कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण तथा स्थानीय संसाधनों के समुचित उपयोग को एकीकृत किया गया है।

- **सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल (मध्य प्रदेश)**

कृषि आधारित स्वावलंबन और स्वदेशी तकनीक – नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास मॉडल में कृषि को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला माना गया है। उनका विश्वास था कि जब तक किसान आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगा, तब तक गाँव और राष्ट्र दोनों का समग्र विकास संभव नहीं है। इसी दृष्टि से उन्होंने कृषि को आधुनिक वैज्ञानिक सोच तथा स्थानीय संसाधनों के समन्वय के साथ विकसित करने पर बल दिया। उनका उद्देश्य ऐसी कृषि व्यवस्था विकसित करना था जो कम लागत, अधिक उत्पादन और पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत पर आधारित हो। नानाजी ने देखा कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश किसान लघु एवं सीमांत श्रेणी के हैं, जिनके पास सीमित भूमि, पूँजी तथा सिंचाई के संसाधन उपलब्ध हैं। सिंचाई के अभाव में किसान वर्ष में केवल एक ही फसल ले पाते थे, जिससे उनकी आय सीमित रहती थी और वर्ष के शेष समय उन्हें बेरोजगारी एवं आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडता था। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बाँस से कम लागत वाले नलकूप (बाँस बोरिंग) विकसित करवाए। इनका निर्माण लोहे अथवा प्लास्टिक के महंगे पाइपों की तुलना में काफी सस्ता था, जिससे छोटे किसानों के लिए सिंचाई सुविधाएँ सुलभ हो सकीं। परिणामस्वरूप सिंचाई लागत में उल्लेखनीय कमी आई और किसान वर्ष में दो से तीन फसलें लेने में सक्षम हुए। नानाजी देशमुख ने हर खेत को पानी, गाँव का पानी गाँव में के सिद्धांत को व्यवहार में उतारते हुए व्यापक जल संरक्षण अभियान चलाया। इसके अंतर्गत मेडबंदी, खेत–तालाब, चेक डैम, जलाशय, वर्षा जल संचयन तथा भूजल पुनर्भरण जैसी तकनीकों को अपनाया गया। इन प्रयासों से वर्षा जल का संरक्षण हुआ, भूजल स्तर में वृद्धि हुई तथा सूखे की समस्या से प्रभावित क्षेत्रों में भी कृषि उत्पादन बढा। जल संरक्षण के कारण बंजर भूमि खेती योग्य बनी और किसानों की उत्पादकता में वृद्धि हुई। उन्होंने कृषि विविधीकरण पर विशेष बल दिया। पारंपरिक अनाजों के साथ–साथ फल, सब्जियाँ, दलहन, तिलहन तथा औषधीय पौधों जैसे आँवला, एलोवेरा, अश्वगंधा और तुलसी की खेती को प्रोत्साहित किया गया। इससे किसानों की आय के अनेक स्रोत विकसित हुए तथा एक ही फसल पर निर्भरता कम हुई। इसके अतिरिक्त डेयरी, गोपालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन जैसी सहायक गतिविधियों को कृषि से जोडकर ग्रामीण परिवारों की आय में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित की गई। स्वदेशी तकनीक के क्षेत्र में नानाजी देशमुख ने स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक कृषि पद्धतियों और आधुनिक विज्ञान का समन्वय किया। उन्होंने ऐसी तकनीकों को अपनाने पर बल दिया जो कम लागत वाली, पर्यावरण के अनुकूल, स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप तथा ग्रामीणों द्वारा आसानी से संचालित की जा सकें। इससे किसानों की बाहरी संसाधनों पर निर्भरता कम हुई, उत्पादन लागत घटी और आत्मनिर्भरता की भावना को बल मिला।

उद्यमिता विद्यापीठ एवं कौशल आधारित स्वरोजगार – नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास मॉडल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ उद्यमिता विद्यापीठ है। इसकी स्थापना का मूल उद्देश्य ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला बनाना था। नानाजी का मानना था कि भारत जैसे विशाल देश में प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को सरकारी या निजी नौकरी उपलब्ध कराना संभव नहीं है। इसलिए आवश्यक है कि युवाओं को उनकी रुचि, स्थानीय संसाधनों और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल प्रदान कर उन्हें स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाया जाए। चित्रकूट स्थित उद्यमिता विद्यापीठ इसी सोच का परिणाम है। यहाँ ग्रामीण युवाओं, महिलाओं तथा बेरोजगार व्यक्तियों को व्यावहारिक एवं कौशल आधारित प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण का स्वरूप पूर्णतः स्थानीय आवश्यकताओं और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है, जिससे प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अपने ही गाँव या आसपास के क्षेत्र में रोजगार स्थापित कर सके। इस संस्थान में बाँस एवं लकडी से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण (अचार, मुरब्बा, पापड मसाले, जैम, जूस आदि), दोना–पत्तल निर्माण, अगरबत्ती एवं मोमबत्ती निर्माण, सिलाई–कढाई, बुनाई, डेयरी उद्योग, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, गोपालन, मत्स्य पालन, जैविक खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, कृषि यंत्रों की मरम्मत, ट्रैक्टर एवं पम्पसेट की सर्विसिंग तथा लघु कुटीर उद्योगों से संबंधित अनेक

प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इन प्रशिक्षणों का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और उद्यमशीलता का विकास करना भी है।

नानाजी देशमुख का मानना था कि कौशल विकास तभी सार्थक है जब प्रशिक्षण के साथ–साथ वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और विपणन की व्यवस्था भी उपलब्ध हो। इसी कारण उद्यमिता विद्यापीठ प्रशिक्षित युवाओं को बैंक ऋण, सरकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा सहकारी संस्थाओं से जोडने का कार्य भी करता है। साथ ही उत्पादों के विपणन के लिए स्थानीय हाट–बाजार, प्रदर्शनी, मेले और अर्ध–शहरी बाजारों से संपर्क स्थापित कराया जाता है, जिससे उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त हो और बिचौलियों पर निर्भरता कम हो। इस मॉडल की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं को भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर विशेष बल दिया गया है। महिलाओं को सिलाई, कढाई, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, अगरबत्ती, मोमबत्ती तथा अन्य घरेलू उद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें परिवार की आय बढाने में सहभागी बनाया गया। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई, बल्कि सामाजिक सम्मान और निर्णय लेने की क्षमता में भी वृद्धि हुई। उद्यमिता विद्यापीठ का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह प्रशिक्षण को केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उद्यम स्थापित करने, उसका प्रबंधन करने, गुणवत्ता बनाए रखने, लागत नियंत्रण, विपणन और ग्राहक संतुष्टि जैसे विषयों पर भी मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार प्रशिक्षणार्थी एक सफल उद्यमी के रूप में विकसित होता है। नानाजी देशमुख का यह मॉडल ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग, कौशल विकास, स्वरोजगार, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे गाँवों में रोजगार के नए अवसर सृजित हुए, युवाओं का शहरों की ओर पलायन कम हुआ, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिली।

समाज शिल्पी दंपति की सांगठनिक भूमिका – नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास मॉडल की सबसे मौलिक, अभिनव और प्रभावशाली विशेषताओं में समाज शिल्पी दंपति की अवधारणा प्रमुख है। यह केवल एक संगठनात्मक व्यवस्था नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज में सामाजिक परिवर्तन, जनसहभागिता और आत्मनिर्भरता स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। नानाजी देशमुख का दृढ विश्वास था कि किसी भी विकास योजना की वास्तविक सफलता केवल सरकारी योजनाओं, वित्तीय सहायता अथवा तकनीकी संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि ऐसे समर्पित, प्रशिक्षित एवं संवेदनशील कार्यकर्ताओं पर निर्भर करती है जो ग्रामीण समाज के बीच रहकर उनकी आवश्यकताओं को समझें, उनके साथ विश्वास का संबंध स्थापित करें तथा उन्हें अपने विकास का सक्रिय भागीदार बनाएँ। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा समाज शिल्पी दंपति की अभिनव व्यवस्था विकसित की गई। इसके अंतर्गत देश के विभिन्न क्षेत्रों से उच्च शिक्षित, विवाहित तथा समाज सेवा के प्रति समर्पित युवा दंपतियों का चयन किया जाता था। चयन के उपरांत उन्हें ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियों का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था, ताकि वे केवल सलाहकार न रहकर ग्रामीण समुदाय के साथ एक परिवार की तरह कार्य कर सकें। प्रशिक्षण के बाद प्रत्येक समाज शिल्पी दंपति को लगभग 5 से 10 गाँवों के एक समूह (क्लस्टर) की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। वे इन गाँवों में नियमित रूप से रहते, ग्रामीण परिवारों से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करते तथा उनकी समस्याओं, आवश्यकताओं और संभावनाओं का गहन अध्ययन करते थे। उनकी भूमिका किसी सरकारी अधिकारी की तरह आदेश देने की नहीं, बल्कि सहयोगी, मार्गदर्शक और प्रेरक की होती थी। इसी कारण ग्रामीणों में उनके प्रति विश्वास, आत्मीयता और सहयोग की भावना विकसित होती थी।

समाज शिल्पी दंपति का प्रमुख दायित्व ग्रामीणों को आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित करना था। वे किसानों को आधुनिक एवं स्वदेशी कृषि तकनीकों, जल संरक्षण, जैविक खेती, पशुपालन, बागवानी तथा कृषि विविधीकरण के विषय में जानकारी प्रदान करते थे। साथ ही ग्रामीण युवाओं को उद्यमिता विद्यापीठ से जोडकर स्वरोजगार एवं कौशल विकास के अवसर उपलब्ध कराते थे। महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के गठन, लघु

उद्योगों, बचत की आदत, सूक्ष्म वित्त तथा आय–वर्धक गतिविधियों से जोडकर आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य भी इन्हीं के माध्यम से किया जाता था।समाज शिल्पी दंपति मॉडल की सबसे बडी विशेषता यह थी कि यह बाहरी सहायता पर निर्भरता बढाने के बजाय ग्रामीण समुदाय की आंतरिक शक्ति को जागृत करता था। यह मॉडल ग्रामीणों में आत्मविश्वास, स्वाभिमान और सामूहिक उत्तरदायित्व का विकास करता है। इसी कारण चित्रकूट क्षेत्र के अनेक गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, जल संरक्षण, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक समरसता के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले।

विवाद–मुक्त एवं मुकदमेबाजी रहित सामाजिक ढाँचा – नानाजी देशमुख के ग्रामीण विकास मॉडल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट पक्ष विवाद–मुक्त एवं मुकदमेबाजी रहित सामाजिक ढाँचा है। उनका स्पष्ट मत था कि किसी भी गाँव का वास्तविक विकास केवल आर्थिक समृद्धि से संभव नहीं है, बल्कि उसके लिए सामाजिक शांति, आपसी विश्वास, सहयोग और सामुदायिक एकता भी उतनी ही आवश्यक है। यदि ग्रामीण समाज निरंतर आपसी विवादों, भूमि संबंधी झगडों, पारिवारिक कलह, जातीय संघर्षों तथा न्यायालयों में चलने वाले मुकदमों में उलझा रहेगा, तो उसकी आर्थिक प्रगति और सामाजिक उन्नति दोनों बाधित होंगी। इसलिए उन्होंने ग्रामीण विकास के साथ–साथ सामाजिक सद्भाव और विवाद–मुक्त वातावरण को भी समान महत्व दिया। नानाजी देशमुख का मानना था कि ग्रामीण समाज में अधिकांश विवाद ऐसे होते हैं जिन्हें आपसी संवाद, समझदारी और सामुदायिक सहयोग से आसानी से सुलझाया जा सकता है। किंतु जागरूकता के अभाव, आपसी अहंकार तथा बाहरी हस्तक्षेप के कारण छोटे–छोटे विवाद न्यायालयों तक पहुँच जाते हैं, जहाँ वर्षों तक मुकदमे चलते रहते हैं। इससे ग्रामीणों का समय, धन और मानसिक शांति नष्ट होती है। न्यायालयों के चक्कर लगाने, वकीलों की फीस देने तथा बार–बार शहर जाने के कारण गरीब और मध्यमवर्गीय ग्रामीण परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। साथ ही परिवारों और समुदायों के बीच कटुता भी बढ जाती है। इसी समस्या के समाधान के लिए नानाजी देशमुख ने विवाद–मुक्त ग्राम की अवधारणा विकसित की। इस व्यवस्था का मूल उद्देश्य था कि गाँव के अधिकतर विवादों का समाधान गाँव में ही, आपसी सहमति, संवाद और पंचायत के माध्यम से किया जाए। इसके लिए ग्राम सभा, पंचायत, समाज के वरिष्ठ नागरिक, समाज शिल्पी दंपति तथा सम्मानित व्यक्तियों को मध्यस्थ की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया गया। ये सभी निष्पक्ष भाव से दोनों पक्षों की बात सुनते थे और न्याय, नैतिकता तथा सामाजिक हित को ध्यान में रखते हुए समझौते का मार्ग निकालते थे। इस मॉडल में विशेष रूप से यह प्रयास किया गया कि भूमि विवाद, पारिवारिक विवाद, सिंचाई, रास्ते, सीमांकन, आपसी लेन–देन तथा सामाजिक मतभेद जैसे मामलों को न्यायालय में ले जाने के बजाय ग्राम स्तर पर ही सुलझाया जाए। इसके लिए नियमित ग्राम बैठकों, सामूहिक संवाद, सामाजिक परामर्श तथा पारंपरिक पंचायत व्यवस्था का सकारात्मक उपयोग किया गया। इस प्रक्रिया में किसी एक पक्ष की जीत या हार के बजाय पूरे गाँव की सामाजिक एकता को प्राथमिकता दी जाती थी।

विश्लेषण एवं समकालीन प्रासंगिकता – नानाजी देशमुख का ग्रामीण विकास मॉडल भारतीय ग्रामीण जीवन की वास्तविक आवश्यकताओं, स्थानीय संसाधनों, सामाजिक सहभागिता तथा आत्मनिर्भरता के सिद्धांत पर आधारित एक समग्र एवं सतत विकास मॉडल है। यह मॉडल केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सांस्कृतिक तथा नैतिक विकास को भी समान रूप से महत्व देता है। इसी कारण यह मॉडल आज भी ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक आदर्श एवं अनुकरणीय मॉडल के रूप में देखा जाता है। यदि इस मॉडल का गहन विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि नानाजी देशमुख ने विकास की प्रक्रिया को नीचे से ऊपर के सिद्धांत पर आधारित किया। उनका मानना था कि किसी भी विकास योजना की सफलता तभी संभव है जब उसका निर्माण स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं, अनुभवों तथा सहभागिता को ध्यान में रखकर किया जाए। उन्होंने विकास को केवल सरकार की जिम्मेदारी न मानकर समाज, स्वयंसेवी संस्थाओं, पंचायतों तथा स्थानीय समुदाय की संयुक्त जिम्मेदारी के रूप में देखा। यही कारण है कि चित्रकूट मॉडल में

ग्रामीण स्वयं अपने विकास के सक्रिय भागीदार बने, न कि केवल योजनाओं के लाभार्थी।नानाजी देशमुख के मॉडल की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें स्वावलंबन को विकास का मूल आधार माना गया है। उन्होंने ग्रामीण समाज को बाहरी सहायता पर निर्भर बनाने के बजाय स्थानीय संसाधनों, स्थानीय कौशल, स्थानीय श्रम तथा स्थानीय नेतृत्व के आधार पर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया। कृषि, जल संरक्षण, कुटीर उद्योग, पशुपालन, कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण तथा उद्यमिता को एक–दूसरे से जोडकर उन्होंने ऐसी ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकसित करने का प्रयास किया, जो दीर्घकाल तक स्वयं टिकाऊ बनी रहे।

चित्रकूट मॉडल का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि यह केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी मॉडल है। समाज शिल्पी दंपति, विवाद–मुक्त ग्राम, स्वच्छता अभियान, महिला स्वयं सहायता समूह, सामुदायिक नेतृत्व निर्माण तथा जनसहभागिता जैसे कार्यक्रमों ने ग्रामीण समाज में सहयोग, विश्वास, सामाजिक समरसता तथा लोकतांत्रिक सहभागिता को मजबूत किया। समकालीन भारत के संदर्भ में देखें तो नानाजी देशमुख का ग्रामीण विकास मॉडल अनेक राष्ट्रीय योजनाओं और नीतियों के साथ पूर्णतः सामंजस्य स्थापित करता है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (छत्स्ड), वोकल फॉर लोकल, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन तथा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जैसी योजनाओं के मूल उद्देश्यों में आत्मनिर्भरता, स्थानीय उत्पादन, कौशल विकास, रोजगार सृजन तथा सामुदायिक भागीदारी को बढावा देना शामिल है। ये सभी तत्व नानाजी देशमुख के चित्रकूट मॉडल में कई दशक पहले से व्यवहारिक रूप में लागू किए जा चुके थे।

निष्कर्ष – इस संपूर्ण शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण और निष्कर्षों के आधार पर यह प्रामाणिक रूप से कहा जा सकता है कि भारतरत्न नानाजी देशमुख का ग्रामीण विकास मॉडल केवल एक तात्कालिक आर्थिक ढांचा नहीं है, बल्कि यह समग्र ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक और मानसिक रूपांतरण का एक महान आध्यात्मिक महाअभियान है। स्वरोजगार और स्वावलंबन के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण समाज को याचक की श्रेणी से बाहर निकालकर आत्मनिर्भर कर्ता और उत्पादक के रूप में स्थापित करने का भगीरथ कार्य किया। आज के इस आधुनिक डिजिटल और तकनीकी युग में भी, यदि भारत को अपनी 65 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण आबादी को आर्थिक रूप से सशक्त और देश की जीडीपी में भागीदार बनाना है, तो चित्रकूट मॉडल की मूल आत्माकृअर्थात स्थानीय संसाधनों का दोहन, स्वदेशी तकनीक का विकास, कौशल–आधारित स्वरोजगार और विवाद मुक्त सामाजिक संरचना को देश की मुख्यधारा की राष्ट्रीय नीतियों के केंद्र में अनिवार्य रूप से स्थापित करना होगा।

संदर्भ सूची–

1. हरिजन ,4 अप्रैल 1936।
2. सिंह अमरजीत ,'मध्यप्रदेश में पंचायतीराज एवं ग्राम स्वराज' मथुरा ,2009 ,पृ०8 ।
3. कुमार , राकेश (2018). भारत रत्न नानाजी देशमुखरू जीवन और दर्शन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. देशमुख, नानाजी (1998). ग्राम शिल्पी दंपतीरू अवधारणा और कार्यप्रणाली, दीनदयाल शोध
5. संस्थान प्रकाशन, चित्रकूट, मध्य प्रदेश।
6. दीनदयाल शोध संस्थान , चित्रकूट परियोजना रिपोर्ट और ग्रामोदय मासिक पत्रिका (2000–2010 के विभिन्न अंक), दीनदयाल
7. शोध संस्थान संस्थानिक अभिलेख, चित्रकूट।

8. सिंह, राम (2020). ग्रामीण विकास का चित्रकूट मॉडल एक आत्मनिर्भर पथ, नोशन प्रेस, चेन्नई।
9. शर्मा, पी. के. एवं वर्मा, एस. (2023). नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप और ग्रामीण स्वरोजगार, शिक्षण संसोधन
10. जर्नल, वॉल्यूम 6, अंक 7, पृष्ठ 112–124।
11. योजना आयोग, भारत सरकार (2002). ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और गैर–कृषि गतिविधियाँ एक अध्ययन, योजना आयोग सचिवालय, नई दिल्ली।

डॉ. सिद्धार्थ मिश्र, Email- siddharthamishra188@gmail.com , Contact No- 8004243180